

वापस से उस ही रेलगाडी को पिछे कई रैलडिब्बे लगे वो फिरसे ट्रॅक से आगे बढ रही है । हां जी !! ये हू मैं..... नाम और काम तो आपने पेहले पढा ही होगा । तो भी बता दु की नाम है हमारा रियांश । अब पेहले ही आपने पढा होगा मेरे और आरोही के बारेमें । बोहत से कारनामे पेहले हो चुके थे । अब कई और कारनामे होना और उसका एक समय के लिये रुक जाना ,आरोही का दूर जाने के बाद वापस से आकर फिरसे दूर चले जाना अभी बाकी था ।

भाईसहाब, अगर आप सोच रहे होंगे की ये कहाणी खतम होने के बाद ये आगे क्या माजरा लिखा जा रहा है तो मैं आपको बता दु की मुझे भी तो लगा था की रियांश का आरोही

को दिल से निकालने की बात करना एक तुटी हुई तार गिरने जितनी ही सच होगी । पर करे तो क्या करे दिल का खेल था जनाब , सब सोचने से सबकुछ मुक्कमल हो जाता तो कब का सब ठिक हो जाता ,और ना ही ये शब्दोके मायने ये किताब लेखी जाती।

पर उस और इस किताब में दुरी बस कई शब्दोकी और यादो की उतार चढाव पर एक आस लगायी मुक्कमल हो चुकी है । पर हां..... इस बार ये सच है की ये उस कहाणी का आखरी अरसा तय कर चुकी है । बोहत मजेसे पिछली बार कहाणी खतम कर गया था केहकर ये की “ उठेगे किसीं रोज किसीं नये आरोही के इश्क में फिरसे पड जाने को “। हा.....उठा तो

था पर किसीं नये नही बलकी पुराने आरोही के इश्क में फिरसे पड गया था । आगे बढती कहाणी के साथ रियांश भी तो अब कुछ 23 साल का हुआ है । दिन और उमर के साथ कुछ चिजों का बदलना भी जायज है । पर शहर की गलिया , आरोही और उस शहर की गलियो से दौडने वाला रियांश नही बदला था । जो बदल सा गया था वो बस समय और तकदीर थी ।

अबतक तो आरोही को मेंने अपने ढंग से प्यार दिया ,कुछ फायदा नही हुआ..... अब उसे वो प्यार दु जो वो चाहती है । कुछ अलग ढंग का, किसीं अलग किसम का ! जादूगार के पास जादू ना कभी होता है और ना कभी लाता है ,उसे वो खुद पैदा करता है ।

अगर लडकी सही हो तो किसीं चीझ को करने से हिचकीचाओ मत, और जो तुम्हारे लिये करती है वो उसे कभी भूलो भी मत । पर प्यार एक तरफा हो तो किसीं घंटी बजने वाले घडी जैसी हलत हो जाती है , हर घंटे बजते रहो और कोई तुम्हारी तरफ देखे भी ना । बस समय आते डिंग-डाँग डिंग-डाँग बजते रहो ।

जिंदगी अब इस मुकाम पर आ चुकी है की आनेवाला दिन कैसा होगा, अच्छा गुजरेगा या बुरा । और अच्छा गुजर भी जाए तो किस मोड पर उदासी अपना बिस्तर फैलाये , ये कुछ बताया नही जा सकता । मैं पेहले भी बोल चुका हू की लडकी और रॉकेट इंसान को कही भी पोहचा सकती है । पोहच गया.....किसीं जगह

पर नहीं बलकी कई दोस्तोंसे ,अपने आप से
,बलकी आरोही तक से भी अब दूर होते जा रहा
हू । अब और आपको मैं क्या बताऊ वो मेरे लिये
कोन है । इसके लिये मुझे अपनी पूरी जिंदगी
के बारेमे बताना पड़ेगा ,आधी तो बता चुका हू,
और बता भी दु तो आप समझेंगे क्या ,लोग
समजते है क्या । और अगर समझते होते तो
मुझे यु ऐसे दिल तुडवाकर ना बैठना पडता ।
जी मैं रियांश मिश्रा , और ऐसी है आगे की
कहाणी ।

SECRET HEAVEN – II

- भूषण माने

इस दुनिया में हर किसी की कोई ना कोई कहाणी होती है । कई अच्छी, कई बुरी तो कई कहानियों का अंत अच्छा या बुरा हो सकता है । इस दुनिया में सबकी कोई ना कोई कहाणी होती है , मेरी भी एक कहानी थी ।

ना....."कहाणी थी" नहीं केह सकते, बल्की अभी भी वो चालू है और खतम होने में दूरी तक नहीं है । कहाणी की शुरूवात होने से पहले पिछली कहाणी का फ्लैश-बैक अगर बता दु तो समझने और समझाने में ज्यादा वक्त नहीं जाया होगा ।

तो एक लडका था दिवना सा एक लडकी पे वो मरता था । दोनो के नाम तो आप जानते ही है । रियांश, आरोही के पिछे एक तरफा प्यार करते बैठे देड साल आरोही की राह देखने पर

भी उसका रियांश के दिल को तुड़वाकर उसे सुलाना और फिर उस दिल का किसीं नए आरोही के इश्क में फिरसे पड जाने की बात केहने तक का सफर पिछली किताब में गिना होगा । और उस वक्त तो किसीं छोटे झगडे के करण हम बात भी नही कर रहे थे । मानो सब रुक सा गया था..... मुझे तो लग रहा था की इस किताब का आखरी सफर तय हुआ !! ये उस वक्त ही लगा था और किताब का आखरी पन्ना उदासी का माहोल छाने लगा । आपको पढकर भी तो लगा होगा ,की रियांश और आरोही के कहाणी का THE END हो गया होगा । पर नही.....वो तो बस एक अरसा था जो मैं उस समय मेहसूस कर रहा था । मुझे खुद लग था

की बस अब कहाणी खतम हुई और इतने समय तक ही भगवान ने हमारे अरसा तय किया होगा शायद । पर नहीं, भगवान आगर चैन से और आसानी से जिंदगी के हर मुकाम हासिल करणे दे तो लोग मंदिर जाना छोड देते । मुझे मालूम नहीं था मेरी आगे भी उसके साथ कोई कहाणी लिखी जाने वाली है । दरअसल मैंने ये सोचा भी नहीं था की मैं आगे उसके लिए कुछ लिखुगा । पर अब आगे हुई सब कहाणी लिखना चाहता हू । हां.... इस कहाणी के बाद आपको पता चलेगा की लडकी और रॉकेट इंसान को कही भी कैसे पोहचा सकती है । अभी भी हालात में कोई बदलावं नहीं , वही टायर पंकचर हुए जैसा दिल और उस दिल के साथ जिंदा मैं । पेहले हसते

खेलते जिंदगी कट रही थी ,पर जिंदगी गुजारते जब जवानी आगे से आ जाती है तो हर कोई अपने जिंदगी में आग लगाने के लिए एक आग से गुजरता हुआ तिर पकड लेता है और उस तिर का नाम होता है इश्क । और शायद इस तिर को मैंने कुछ इस कदर पकड रखा था की वो छूटने का नाम नहीं ले रही थी ।

तो भाईसहाब, वो पिछली किताब के बाद हुआ यू की , उस समय हम बात नहीं कर रहे थे ,सब बिखर सा गया था पर मुझे तो आरोही की आदत लग चुकी थी । देड साल में पहली बार इतने दिन तक हमने एक लफज एक दुसरे से नहीं निकाला । वो 6 दिन बोहोत भारी से गुजर रहे थे और एक दिन सवेरे मैंने उसे

मेसेज किया । हा.... उस समय अगर मैं नहीं करता तो हम दोनों को लगी एक दुसरे की आदत छूट जाती मगर न जाने क्यु पर मेरा दिल नहीं माना और उससे बात करने पर मजबूर हो गया ,क्या करू ?? प्यार जो करता था उससे । मेरे बात करने के बाद अब गाड़ी कही फिरसे चालू होना शुरू हो गयी थी । मेरे बात करने के बाद वो भी मुझसे बात करने लगी । बड़ी घुस्से में थी ,घुस्सा इस बात का था की बात करना बंद क्यों किया और इतनी बड़ी किताब लिखी तो लिखी पर उसे बताया तक नहीं , घुस्सा करना जायज भी था । क्यु ना करती ?? उसे भी मेरी आदत लग चुकी थी । तो घंटे - दो घंटे तक उसका घुस्सा कायम रहा

,पर बादमे वो मिट जाने के बाद फिरसे वही दिन , वही पुराने दिनो जैसे हर रोज होने वाली बातें और फिरसे दिल में एक नया माहोल छा गया । और पेहले जैसे फिरसे हम बात करने लगे । उन दिनो ना मैं बडा खुश था, मानो दिल बडा गार्डन-गार्डन सा होता था, पर अब..... खैर छोडो.... कोई फायदा नही !!

पेहली कहानी देखते मेंने सोचा था की मे उसे गवा बैठा । पर उस किताब के बाद जिंदगी का सही turning point चालू हो गया । मेंने उसे प्यार का इजहार करने के बाद और उसका उस प्यार को ठुकराने के बाद वो किताब लिखी थी । पर मुझे पता नही था की वो बस एक कहानी का interval था ,अभी और बाकी

कुछ होना बाकी था । मेरा प्यार ठुकराने के बाद भी मैंने उसकी राह देखना छोड़ा नहीं ,मैं उसे उतना ही प्यार करता था जितना की पेहला । सो हुआ यु की ,एक दिन मैंने एक कागज पर लिखा था की " मैं तुम्हारी अंदर छुपी हुई बात तो नहीं जानता मगर मैं तुम्हारी राह देख रहा हू / देखता रहूंगा ,नजाने 4 साल 5 साल पर राह देखते रहूंगा, कोई जल्दबाजी नहीं । जिंदगी काटणी है तुम्हारे साथ , कोई गुड्डा- गुड्डी का खेल नहीं खेलना चाहता जो कुछ चंद घंटों का हो । तो तुम जब उस विषय पर बात करना चाहोगी तब रुको मत ,मैं इन्तेजार करता रहूंगा न जाने कितने दिन लगने दो । " आपको दरअसलं हसी आ रही होगी इस बात पर ,पर ये

सच है ,प्यार करता था उस से कोई समझोता
नाही ।और आगे वो एक कागज पर ये सब
लिख कर मैंने उसे रात 12 बजे भेज दिया ।
सुबह उठने पर आरोही ने उसे देखा और वो
बोली "समय मिलते पढ लुगी" । यह सूनकर
थोडा दुःख हुआ की भाई इतना लिखा मगर
उसे मेरे वो 2 कागज पढने के लिए समय
नही... छोडो कोई अफसोस नही । उस दिन रात
होते ही आरोही बोली "मैंने पढे वो 2 कागज ",
मैंने उसके बोलने पर "अच्छा" जवाब दे के बात
वही खतम की । आगे कुछ बोलना चाहा ही
नही और चाहता भी तो क्या ,क्या बोलता उसे
उस कागजोपर ,सो चूप हो कर बात खतम की
। पर नही... ,फिरसे दुसरे दिन आरोही बोली "

मुझे थोड़ा वक्त चाहीये उन कागजोपर थोड़ा सोचने के लिए। ", यह बात सूनकर फिरसे एक आशे की किरण जाग उठी की चलो... हो ना हो पर आरोही ने देड साल बाद मेरे बारे में सोचना चाहती है । उसकी बात पर मैंने भी बड़े खुशी के साथ जवाब दिया " लो जितना वक्त चाहती हो लो , 1-2 साल लो कोई जल्दबाजी नहीं ,मैं तुमहें नहीं पुछुगा कभी की ' क्या तुमने मेरे बारे में कुछ सोचा? ',तुम चाहो उतना वक्त लो ।"

पर केहते है ना , जिंदगी किसीं अच्छे रास्ते से गुजरना चालू हो तब आगे कोई तो ट्राफिक पोलीस हमारी गाडी रोखणे के लिए रुका ही होता है । ये ONLINE-OFFLINE की दुनिया में कोई भी किसीं भी देश का हो ,

दोस्ती हो सकती है ,पहचान हो सकती है । वैसे ही एक नई लडकी से मुलाकात हुई नाम है "रिया "। कहा से है,कोण है मुझे अजतक पता नहीं पर बादमे हुआ यह की हम बात करणे लगे ,और उसने मेरी पिछली किताब पडी ,उसने मुझे आरोही के बारेमे पुछा । मेरा दिल हलका करने के लिए रिया एक अंजान होणे के कारण मैंने उसे सब बात बता दी । पर मुझे पता नहीं था की वो मेरी सबसे बडी गलती होगी । उस लडकी के कारण मेरे आज यह हालात है । पर कोई गैर नहीं मैं उसे भी माफ कर चुका हू । असलं मैं हुआ यह था की , उस दिन तक हुई हर एक हकीकत मैंने उस लडकी को बताया ,सबकुछ.....मतलब शुरू से लेकर आखिर तक

सबकुछ । मैं आरोही को तो बता चुका था की कोई जल्दबाजी नहीं तुम जितना वक्त लेना चाहती हो सोचने के लिए ले लो । पर यह बात रिया को बताने पर उसने मुझे कहा "बोहत वक्त बीत चुका है , अबतक तो आरोही ने सोच भी लिया होगा , तुम उसे पुछो तो सही उसे उसके दिल का हाल",अब यह बात सुनने पर मेरा दिमाग भी इस बात के पिछे सोचने लगा । अजतक तो बस मैं आरोही को उसकी मन पसंद चिजे दे रहा था ,पर उस वक्त एक दिन मेरा जन्मदिन था और मेरे दोस्त आरोह ने उसके हाथ से बनाया केक लाया था । रात के 12 बजे कोई जन्मदिन की शुभकामनाएं आरोही से मिले ,इतना कुछ मैं उसके लिए खास ना था । पर

दोपहर कुछ 2 बजे उसने शुभकामना दी वो भी एक कॉल कर के, यह सबसे बड़ा तोहफा था उस दिन का । अच्छा तो बाद में हुआ यह की रिया की उस बात पर मैंने सोचना चालू किया । वो रिया के बोले शब्द दिमाग में कब्जा कर बैठे थे । फिर कुछ दिनों बाद मैंने आरोही से डरते हुए पूछा " तुम ने मुझे वो 2 कागजों पर सोचने के लिए वक्त मांगा था ,क्या तुम ने उसपर कुछ सोचा ??", इसपर उसका जवाब था " हा....सोचा । रात में उसपर बात करेंगे ।" 10वीं के छात्र को बोर्ड exam के result के दिन जैसे टेन्शन आता है कुछ वैसे ही मेरी भी हालत हो गई थी । आरोही ने क्या सोचा होगा , वो रात में क्या जवाब देगी ,कल सुबह का दिन कुछ अच्छा

एहसास लाएगा या फिर बुरा , ऐसे कुछ सवाल दिमाग में नाच रहे थे । मैंने उसे ये भी बोला था की " अगर तुम्हारा जवाब पिछली बार जैसे ही होगा तो बता दो , हम रात उस विषय पर नहीं बात करेंगे ।" पर नहीं... वो बोली " नहींरात में बात करेंगे । "....फिर आगे क्या ?... रात हुई और आगे उसका जवाब यह था की " मेरा जवाब वो ही है जो पिछली बार था पर उसकी वजह यह है की मैं हमारे भविष्य के बारे में तुम्हें guarantee नहीं दे सकती और मुझे अभी भी कुछ मेहसूस नहीं होता तुम्हारे लिए । सो मुझसे उम्मीद भी मत रखे बैठो ।" अब क्या करता..... दिल में लगी ट्यूबलाइट झटाक से

डिम होना चालू हुई । फिरसे वही टूटा दिल और उसके साथ में बिखरा पडा ।

इस कहाणी का सबसे बडा राज में बताने जा रहा हू । आपको यह सब कहाणी सूनकर यह जरूर लाग रहा होगा की , भाई रियांश की इतनी घिसी-पिटी होने के बावजूद ऐसी कोणसी चिज है जिसके कारण आरोही उसे अपना नही रही है । तो मैं बताना चाहूंगा की आरोही किसीं दुसरे लडके से प्यार कर रही थी ,उसको वो दिल दे बैठी थी....अफसोस पर यह सच बात है । और यह बात मुझे पेहले से पता थी । जी हां.....मैं किसीं ऐसी लडकी से प्यार कर बैठा था जो किसीं दुसरे को दिल दे बैठी थी । पिछली देड साल से मुझे यह पता था

,उसकी राह देख रहा था ,क्या करू ? प्यार जो करता था । मेरा दिल उस लडकी को दे बैठा था ,जिसने उसका दिल किसीं दुसरे को दिया था । काश वो मुझे पेहले मिली होती, काश वो मुझे मिली ही ना होती ,काश हम मिले ही ना होते शायद.....असलं में बात यह थी की जिस लडके को वो दिल दे बैठी थी वो लकडा आरोही के साथ जिंदगी नही काटने वाला था , कुछ चंद दिनों तक माजरा चलने वाला था । ऐसा मैं नही ,आरोही खुद केहती थी । और अभि की बात करे तो वो उनके रिषते को खतम करने वाली ही थी , " खयाल दिखाकर बादमे रिषता तोडने से बेहतर उसे पेहले ही रोक दो ।" ऐसा आरोही का केहना था । और एक दिन ऐसे आना बाकी था

जब आरोही उस लडके के कारण उदासी से रिषता बनाने वाली थी । और मैं तो उसे दुःख होते हुए देखना नहीं चाहता था । असलं मैं एक वाक्य में बोला जाए तो " आरोही उस लडके की कदर करती थी और मैं आरोही की ।" , उस लडके का नाम था विहान । साथ मैं एक कक्षा में पढते थे ,कुछ 1 साल मुलाकात के बाद वो एक दुसरे को पसंद कर रहे थे , और बाद में उनके कहाणी आगे बढ रही थी , और मेरी देड साल..... काहेका देड साल अब तो दो साल होने मे कई दुरी नही ,आरोही की 2 साल तक राह देख कर ही मेरी लगी पडी थी । आरोही चाहकर भी मुझे कुछ बोल नहीं सकती थी क्योकी वो पेहले से ही विहान के साथ रिषता बना चुकी थी

। हा वो उसे तोडना चाहती थी पर वो भी तो उसे दूर तक के सपने दिखा रहा था ।

गलती मेरी थी जो मैंने रिया की बात सूनकर उसे उन 2 कागजोपर सोचकर जवाब देने पर मजबूर किया । वो सबसे बड़ी और आखरी गलती थी । पर आरोही के किसी भी जवाब से मुझपर कोई असर नहीं पडता । मैं पेहले भी उसकी राह देख रहा था ,उस समय भी करता था ,पिछली 2 साल से एक तरफा प्यार करे राह देख रहा था । मेरी कहानी देखे रिया भी मेरे जिंदगी से भाग पडी ,और जाते समय केह गई " उम्मीद मत खोना , शायद उसे तुम में तुमहारा कल दिखता हो पर वो विहान के कारण कुछ बोलती भी ना हो , उसे थोडा वक्त

दो वो एक दिन जरूर बोलगी ।" ,यह केहकर वो मेरे जिंदगी से चल बसी पर अब मैं उसे मिलकर बताना चाहता हू की " वक्त बोहत दिया मोहतरमा , राह भी देखी पर उसे आखिर तक मेरे प्यार का एहसास नही हुआ ।"

अगर किसी लाडकी को प्यार करो तो उस प्यार का इजहार करने से पहले मिलने मे और बाद मिलने मे बडा फरक होता है । एक अलग तरह की बैचेनी सी मेहसुस होती है । मुझे आरोही से मिलना था , बोहत दिन हुआ उसके देखे ,मुझे उसे देखना था । तो एक दिन हम दोनों बहार घूमने गए । दुनिया इतनी हरीभरी है और गाडी के पीछे लड़की बैठी हुई हो तो मन करता है कहा दूर घूम फिरु और फिरसे लौटू ही ना , पर हम दोनों गए घूमने दूर एक

बड़े मंदिर में । इस कोरोना के कारण वो मंदिर भी बंद था । पर उस मंदिर तक का उसके साथ का सफर बड़ा अच्छा था ,दिल में तितलियां नाच रही थी । मंदिर बंद था मगर उस भगवान ने हम दोनों को उसके करीब बुलाया ये बड़ा रोमांचक किस्सा था । तो थोड़ी देर वहा वक्त बिताए हम बादमे निकल पड़े । मेरे गाड़ी पर बैठते वक्त उसका हात वो हर बार मेरे कंधे पर थामती थी ,और मुझे फिर खयाल आता ऐसे ही ये उसका हात आखिर तक उठे ना। बादमे निकलते निकलते हुए हम पोहच गए एक गार्डन में । वहा थोड़ी देर बैठे । मुझे उसे बोहोत कुछ बोलना था ,अपने दिल का सारा करिश्मा अपने लफजो से मिलकर उसे बताना था ,पर कुछ बोल नहीं पाया । उस दिन तो उसने मेरी पसंद की ड्रेस भी पेहनी थी

,मेरी नजर उसपर से हट नहीं रही थी । उस गार्डन से बहार निकले घूमने के बाद हम एक जगह कुछ खाने के लिए रुक गए । खाते खाते उसने बताया कि वो मेरी पेहली किताब उसके दोस्तों ने भी पढ़ी । उनमे से उसकी दो करीबी सहेलिया है राजेश्वरी और श्रुति । श्रुति तो उसके बगल वाले घरमे रहती है और उसकी बोहत करीबी दोस्त है । तो आरोही बोल रही थी कि " श्रुति ने वो किताब पढ़ी और मुझे बोल रही थी कि इस लड़के के बारेमे तुम्हे सोचना चाहिए ,ये दिल से तुम्हे प्यार करता है ।" तो दूसरी सहेली राजेश्वरी बोली की "तू बड़ी किस्मत वाली है जो एक लड़का तेरे ऊपर किताब लिखकर अपना प्यार जता रहा है । " , अब उसकी यह बात सुनकर मैं क्या बोलता । सो कुछ ना बोल पाया बस सुनता गया ,

मुझे बादमे एक खयाल आया कि " आरोही के उन दो सहेलियों को वो पुस्तक गहराही से पता चली ,मगर आरोही को क्यों नही ?? " । जी मैंने उस किताब में भी लिखा है कि " आरोही यह किताब तो पढ़ रही है मगर उसे कुछ समझ नही रहा होगा ।" , और यही तो हुआ ।

" गोल कीपर होते गोल मारना यह एक फुटबॉल का नियम है ।" वैसे किसी लड़की और लड़के की हस्ती जिंदगी तुड़वाकर उस लड़की को अपना बनाना कई लड़को का काम है । और लड़के तो बस बहाना ढूंढते है किसी लड़के और लड़की का रिश्ता तुड़वाने के लिए । तो उस समय आरोही ने मुझे पूछा "तुम्हे क्या लगता है ,क्या विहान मुझसे सच्चा प्यार करता होगा ?? " , 5 मिनीट बोहत होते

किसी लड़के के लिए आरोही के दिल में विहान के खिलाफ जहर भरने के लिए ,मगर मुझे उनकी चलती हस्ती जिंदगी तुड़वाकर मेरी उसके साथ जोड़ नहीं देनी थी ,सो मैं चुप था और उसे बोला " यह सवाल मुझे या किसी दूसरे से नहीं मगर तुम खुदसे पूछो ,जवाब मिल जाएगा । " यह कह कर हम दोनों अपने अपने घर रवाना हो गए । रास्ते में मैंने उसे फिरसे उसकी मनपसंद चीज दी "गुलाबजम" ,और वो खुश हो गई, और उसे खुश देख मैं भी खुश । दिन बड़ा यादगार और अच्छा कट गया । और अब बस वो सुंदर यादे ही काफी है अब मुझे उसकी यादों में जिंदा रखने के लिए ।

कुछ इस तरह से ही जिंदगी कटने लगी , कुछ दिन बीत गए ,कुछ हाफते और

कुछ महिने । एक रात उसने मुझे उनके सोसायटी के निचे रात 12 बजे बुलाया , वो सामने आकर कुछ बातें नही करने वाली थी मगर वो मुझे बोली "बोहत दिन हो गए एक दुसरे को मिले नही,एक दुसरे को देखा नही , तो निचे आजाओ ,में बेडरूम के खिडकी से देखती हू ।" , अब मैं तो पेहले से ही उसके लिए दिमाग से पैदल था और मुझे भी तो उसे देखना था तो वक्त का हालात ना देखे उसे देखने चला गया । रात बोहोत थी ,सोसायटी भी सुनसान थी , में मेरी गाडी से उतरकर धीमी पैरों का बिना आवाज करे उसकी खिडकी के निचे गया और फिर आरोही ने उपर से टॉर्च लागाई थी तो वो भी मुझे साफ साफ दिखाई दी । बोहोत

खूबसुरात दिख रही थी मनो दिल गार्डन गार्डन
हो चुका था ,उसे भी अच्छा लगा और ऐसा
कारनामा देख मजा भी आया था । अगर
किसिने देखा होता तो मेरी कुछ खैर ना थी ,पर
मुझे बस आरोही को देखना था । अरे हा.....
हा आगे फिर एक दिन क्या हुआ की आरोही
बिमार थी ,पुरा दिन भर सोयीं और रात फिर
ऑनलाइन आए बात कर रही थी । तो उसने
कुछ खाया नही था ,बिमारी के कारण मूह में
कडवाहट सी हो गयी होगी शायद , पर ऐसे
खाली पेट कैसे सोती । मुझे उसकी फिकर होने
लगी थी , उसे बोलता कुछ खा लो तो मूह
फेरकर कुछ ना खाती और सो जाती । तो मैंने
किया यु की मेरे पास एक cadbury थी , तो

मैंने उसे पूछा " cadbury खायेंगी ?" उसपर वो बोली " हां... पर इतनी रात 11 बजे कहा मिलेगी ।" तो मैंने एक प्लैन बनाया और उसे बोला " तुम एक बड़ी रस्सी लेकर सोना मैं तुमहें दे दूंगा ।" तो वो बोली " कुछ जादू हो कर रस्सी से cadbury बन जायेगी क्या ऐसा करने से " । तो बादमे भाईसहाब मैंने किया यह की रात 12:30 बजे मैं गया उसकी सोसायटी के निचे और उसे बोला खिडकी में आकर रस्सी को इस कदर छोडो की वो जमीन तक पोहचे ,उसे कुछ पता नही था आगे क्या होगा । सो उसने मैंने कहा किया भी । तो वो cadbury मैंने उस रस्सी को बांधी और उसे खिचने के लिए कहा । उसने वो खिचा तो उसके हात में वो cadbury

पोहच गई ,उसे पता भी नही था की मैं निचे आकर चला भी गया । मैं बोहोत डर गया था , अगर किसिने देखा होता तो मार खाना पडता । पर कोई गैर नही आरोही तो खुश हुई ।

आगे दिन गुजरते चले गए कुछ हसते हुए सोए और कुछ मदहोशी के साथ सोए गुजार रहे थे । इस सब के दौरान एक गलती मुझसे हुई यह थी कि मैंने पहले तो रिया की बात सुनी और दूसरा यह कि मैंने उस बात पर सोचकर आरोही का विहान के साथ रिश्ता होते हुए भी अपने लिए उसे पुछ रहा था । क्या करती वो ?? वो भी तो प्यार करती थी उससे ,उसकी कोई गलती नही, उसका साथ छोड़कर मेरे पास आना भी तो गलत था । सब गलती

मेरी है , मैंने उसे कुछ बोलना ही ना था , काश यह सब पेहले सोचा होता । खैर जाने दो..... तो आगे बढ़ते हुआ यह कि श्रुतिका (अरोही की सहेली) और मैं अच्छे दोस्त बन गए । उस ही प्रकार आरोह (रियांश का दोस्त) और आरोही अच्छे दोस्त बन गए । पर अब हालात यह है कि आरोह ने मेरे हालात देख मुझे अकेला छोड़ उनके साथ मिल गया , वैसे भी उदास आदमी के साथ वक्त काटना किसे पसंद होता है । मैं ऐसा बोल रहा हु इसके पिछे भी एक वजह है और वो आगे आप जान ही जाओगे । और आरोही और मैं हम दोनों जानते थे कि आरोही का विहान के साथ जो चक्कर था वो कुछ दिनों के लिए था , आरोही तो दिल से चाहती थी

मगर विहान का वैसे कुछ ना था , वो एक न एक दिन आरोही को छोड़ने वाला था और यह बात हम दोनों को पता थी । और इसलिए आरोही उनका रिश्ता वही खतम करना चाहती थी ,और मैं आरोही को आगे दुखी देखना नही चाहता था इसलिए उसे अकेला नही छोड़ना चाहता था ।

एक दिन हुआ यह कि रात कुछ 9 बजे के आस पास आरोही और मैं बात कर रहे थे । और मैंने उसे खुलकर सब कुछ दिल की बात बता दी कि " मैं जनता हु अभी तो कुछ हो नही सकता हमारे बीच , पर मैं तो तुम्हारी आखिर तक राह देखते रहुगा, क्योकि मुझे तुम चाहिए ,आखिर तक ; मैं तुम्हे कभी छोड़ना नही

चाहता ।" उसपर उसने जवाब दिया " मत करो मेरा इन्तेजार 😞, तुम गलत लडकी पर प्यार कर बैठे हो ।" यह बात सुनकर पहली बार मुझे रोना आया ,आखिर का रोया था तब करीबन कुछ 12 साल का था । उस वक्त मार पड़ने पर रोना आता था ,पर इस बार ऐसे नहीं ! तो आगे उस बात पर मैं क्या बोलू कुछ समझ नहीं आ रहा था । आगे वो बोल पड़ी " हा मुझे तुम्हारी फिक्र है , स्पेशल हो तुम मेरे लिए, AFFECTION है तुम्हारे लिए ,मगर प्यार नहीं है , और आगे कभी जाकर होगा या नहीं इस बात की भी मैं गारंटी नहीं दे सकती । " ये सब सुनकर कितना दुख हुआ यह काश अगर मैं शब्दों में लिख पाता तो जरूर मैं लिखता ,पहली बार मैं आरोही

के लिए रोया । एक तरफ से आरोही केह रही थी कि " तुम भूल जाओ मुझे " ,तो दूसरी ओर आरोह और श्रुतिका दोनों मेरे दिल से उसे उतारने का प्रयास कर रहे थे और तिसरी जगह पर मेरा बिखर सा गया दिल जो उसे भूल नहीं सकता था , उसके लिए आरोही one and only one option थी । एक गौर करने की बात यह थी कि वो उस दिन हर बात खत्म होने के बाद "🙄" ये ऐसा कुछ उल्टा स्माइल डालती थी । वो उल्टा स्माइल मेरी दिमाग में इतनी अंदर तक घुस गई कि मुझसे बात करने वाले हर एक आदमी से मैं इस स्माइल के बारेमे पूछता था ; कोई कहता था कि उसका इस्तेमाल तब करते है जब कोई बात दिल से ना हो , तो कोई बता

रहा था की उसे तब इस्तेमाल करते है जब बात दिल से ना हो पर मजबूरी से कहना पड़ रहा हो । उसका मतलब पुछते पुछते दिमाग का पुरा हेलिकॉप्टर हो गया था । पर आरोही की वह बात सुनकर मैं बोहत मायूस सा होगया था ।

आरोही ने कहा था की " तुम मेरे लिए खास हो, AFFECTION है तुम्हारे लिए , फीकर बोहत है तुम्हारी मगर प्यार नही " अब गौर करने की और जाहीर सी बात यह है की इन तीन चिजोको मिलाकर ही उसे प्यार केहते है । यह काश उसे पता होता , उसके लिए प्यार की डेफिनिशन कोई अलग होती होगी शायद । या उसे समझने में मेरी भूल हो गयी होगी शायद ।

वो दिन सबसे बुरा दिन बनके गुजर गया ।
हमारे बीच जो दोस्ती थी वो भी मैं गवा बैठा
था । मेरा हर रोज का दिन एक share market
की तरह चल रहा था । हर दिन मूड का एक
उतार चढ़ाव चले जा रहा था । अनेवाला दिन
अच्छा गुजरेगा या बुरा इसका कोई हिसाब
किताब पता नहीं था । उपर से आरोह और
श्रुतिका मुझे आरोही का खयाल दिमाग से
छोड़ने के लिए केह रहे थे । वो दोनों ही नहीं
बलकी जीन जीन को यह पुरा माजरा पता था
वो सब मुझे वही बात केहते थे । और मैं एक
लडका जो उसे कभी भूल नहीं सकता था ।
श्रुतिका का केहना यह था की " दोस्ती के बीच
अगर प्यार आता है तो दोस्ती खराब हो जाती

है , और तुम दोनों के बीच भी कुछ ऐसा ही हुआ है ।" , अब उस पगली को कोन बताए की मैं उसे पेहले दिन से प्यार कर बैठा था । मेरी भी तो बोहोत सी सहेलिया है , मैं आरोही के लिए ही पागल क्यों होता ? तो आगे सब लोग मुझे आरोही का खयाल मेरे दिमाग से निकालने के लिए केह रहे थे , आरोही खुद वही केह रही थी तो मैंने इस बात पर सोचा और उसे भूलने का प्रयास करने लगा । उसके खयालो से दूर रहने के लिए फिर मैंने एक जगह 8 घंटे की नौकरी करना चालू की । हररोज 8 घंटे मोबाइल से दूर , दोस्तो से दूर , आरोही की खयालो से दूर मैं रहने लगा । कुछ करीबन 15 दिन उसकी खयालो से मैं दूर रेहने भी लगा मगर कुछ दिनों

बाद जॉब में भी मुझे उसके खयाल आने लगे ।
मैंने उस से बात करना बंद कर दिया ,मगर
आरोही ने डांटकर फिरसे मुझे उसके साथ बात
करने पर मजबूर किया । आरोही को मुझे
मिलना था ,बोहत दिन हुए हमें मिले उसे
मिलना था मगर मैंने उस बात को टाले उसे
मिलने से इनकार किया । और यह सब चीजें
करने के बावजूद मैं उसे भूल ना सका , मुझे वो
जिंदगी भर चाहिए थी, कुछ गुड्डा गुड्डी का
खेल नही खेलना था जो उसे भूल जाऊ ।

एक बात को नजर अंदाज किया
जाए तो पूरी कहानी में आरोही मुझपर पूरा हक
जता ती थी ,बिना कुछ बोले , हां प्यार नही
करती यह बस बोल रही थी मगर मुझसे ज्यादा

हक वो मुझपर दिखती थी । अब वो बस
मुझपर ही हक जताती थी या गैरोपर भी यह मैं
नही जानता । मैं प्यार करता तो था उससे
मगर उससे कम हक मैं उसपर जताया करता
था । यह बात मेरे दिमाग में कुछ दिनों बाद
आयी । यह सबसे बड़ी मेरी एक गलती थी ऐसा
बोल सकते हैं । बादमे तो आरोही तक बोलने
लगी कि "हमारे बीच अब पहले जैसे दोस्ती नही
रही , बोहत कुछ बदल चुका है । तुम अकेले
रहने लगे हो ।" , अब उस पगली को कोन
बताए कि मेरे अकेले रहने की वजह मैं खुद हु
,उसमे उसका कोई कुसूर ना था । मैं आरोही पर
नजाने कितना कुछ लिखता था पर यह सब
होता था पहले , हां आज भी लिखता हूं मगर

किसीको बताता नहीं ,वह सब चीजें राज बनकर मेरे पास ही लिखे पड़े हैं । एक बार आरोह ने मुझे कहा था कि आरोही के ऊपर एक और लड़का लिख रहा है और आरोही को उसका भी लिखा हुआ पसंद है , तो उस समय से मैंने उसपर लिखना बंद नहीं किया ,मगर उसे दिखाना बंद किया । आरोही के पास बोहोत सारे मेरे तरह नमूने हैं ,और उनमें से एक मैं हु । दुख होता है यह बात बोलते हुए मगर केहना पड़ रहा है अफसोस ।

मैं एक जगह नौकरी कर रहा था तो मेहने की पहली तंखा आ गयी ,अब पहली तंखा से मैं मेरे घरवालों के लिए और आरोही के लिए कुछ लेना चाहता था । अब घरवालों को तो खुश

कर दिया था मगर आरोही के लिए क्या लू कुछ समझ नहीं आ रहा था ,सब कुछ तो था उसके पास । तभी दिमाग में आया घड़ी नहीं है उसके पास । श्रुतिका से पूछा तो वो कहने लगी घड़ी , ड्रेस , एक गुड्डा या फिर एक अंगूठी इसमे से कुछ एक दु उसे । अंगूठी तो नहीं दे सकता था , वो देने के लिए विहान जो उसके पास था । तो पहले तंखा से मेने उसके लिए एक घड़ी ले ली । घड़ी एक ऐसी चीज है जो हमेशा हमे वक्त बताती है और हमेशा हमारे पास रहती है । मैं ना सही मगर मैंने दिए हुए घड़ी ने उसकी हाथ की कलाही पकड़ रखी थी ।

हर कहानी में एक तो साईड हीरो होता ही है ,मेरी कहानी में भी आ गया था

,उसका नाम था " राज " । अब यह आरोही का नया करीबी दोस्त था ,उसे भी आरोही पसंद थी ,वह भी उसे मिलता था ,उसे चाहता था ,दिखने में अच्छा था , पैसा कमाता भी था और पैसे वाला भी था ,और आरोही को भी वो पसंद था । यह बात मुझे आरोह से पता चली । अब उसने मुझे यह बात मजाक में कही वैसे वो और आरोही बोल रही थी । मगर यह बात सुनकर मैं पूरा बिखर गया । यार पूरा 2 साल एक तरफा प्यार करने के बाद कोई दूसरा आए और अपनी मोहोबत को उठाके ले जाए यह बोहोत दुख देने वाला सिन था ,सबसे ज्यादा दुख तब हुआ । बादमे श्रुतिका मुझे कहने लगी कि तुम " हार मत मान लो , एक दिन तो आएगा जब आरोही

को तुम्हारा प्यार पता चलेगा और वो तुम्हारी होगी । " ,पर मेरे अरमान भी बिखर गए थे और मुझे हार खाने के सिवाय कोई और रास्ता भी दिखाई दे नहीं रहा था । मैं पूरा अकेला पड़ गया था , दरअसल पड़ गया हूं । अबे कोई एक तो होता जो मेरे हालात समझे ,कोई एक तो होता जो मुझे और मेरी बात को समझे । अब तो अकेला रहना सिख लिया । मैं बस आरोही से प्यार कर रहा था । उसके बदले मैं मुझे भी उससे प्यार मिले यह मैं सोचता नहीं था । देर से ना सही मगर वो मुझे कभी तो मिलती बस इन खयालो में डूबा रहता था । और वो प्यार मुझसे करती भी तो कैसे , विहान के लिए उसका प्यार था । कोई गैर नहीं ... मैं उसके

लिए कई देर तक ठहर सकता था । फिर कितने महीने या फिर साल ना लग जाए मुझे उसे हासिल करने में । बस इन खयालो के साथ मैं अकेला जीता चले जा रहा था । पर आरोही ने मुझे समझा ही नहीं और ना समझना चाह हा, हम उसके सिवा और चाहते ही क्या थे ।

एक बात को मैंने बारीकी से सोचा कि ,अगर मुझे आरोही मिल भी गयी ; तो क्या मैं उसे खुश रख पाउगा । मेरे पास तो प्यार के सिवा और कुछ है भी नहीं उसे देने के लिए । विहान के पास सब कुछ था पैसे ,नाम और काम और उसके पास आरोही भी थी । मेरे पास कुछ भी नहीं था । मेने 2 साल बस आरोही को अपना बनाने के बारेमे सोचा मगर उसे मिलाने

के लिए कुछ कष्ट नहीं लिए । और यह खयाल
के बद मुझे पता चला कि अगर आरोही मेरी
होती भी है तो वो मेरे साथ कभी खुश नहीं
होगी मगर वह विहान के पास खुश जरूर होगी
। मैं बस आरोही को जिंदगी भर रोता कभी नहीं
देखना चाहता था । पर विहान वैसे कर सकता
था । और आरोही का उसके साथ होना ही
अच्छा था ।और मैं उसे वही खुशी खुशी
अलविदा कहना चाहता था । पर नजाने क्यों ,
आरोही और विहान के बीच कुछ तो हुआ और
उनका रिश्ता टूट गया । विहान उसे अकेला
छोड़ गया । आरोही पूरी बिखर गई , दुखी हो
गयी ,जो मेरे हालात थे वो उसके होने लगे ।
इस सब मैं मैं उसे अकेला छोड़ना नहीं चाहता

था , मैंने उसका साथ नहीं छोड़ा , उसे हँसाता रहा , उसका ध्यान भटकाता रहा , क्या करू कुछ समझ नहीं रहा था मगर उसे अच्छा महसूस करने का एहसास कराना चाहने लगा । कुछ दिन बीत गए और वो विहान के खयालो से बाहर आई ।

अब मुझे उसका साथ तो नहीं छोड़ा था मगर वो अभी भी मुझे मिलने नहीं वाली थी क्योंकि उसने ही कहा था कि " मुझे ना तुम्हारे लिए प्यार आया है ,ना ही आएगा , एक दिन आएगा जब तुम्हे खुद ब खुद सब पता चलेगा और तुम अपने आप MOVE ON हो जाओगे ।" अब MOVE ON से एक बात तो जाहिर थी कि यह बोलने के लिए बोहत आसान था ,मगर मैं

कभी MOVE ON हो नहीं सकता था , आरोही के 2 साल ना बोलने पर भी मैं वो कर नहीं सकता था । मैं उसकी राह देखते ही रहता ,की कभी तो वो मुझे चाहे ,मुझे मिले । एक बार तो मैं प्यार की भीख भी मांग चुका हूं ,भगवान के पास तो मांगता था मगर कभी आरोही के पास मांगने की भी नौबत आएगी ये मैंने सोचा नहीं था । अब आप सोचते होंगे की मुझे कोई SELF RESPECT नहीं , अबे ये जो SELF RESPECT है ना बस उसके लिए ही पूरी जिंदगी के लिए गिरवी रखी है ,बकियोंके लिए नहीं । मगर प्यार भिक मागने के बाद मिले के बाद मिले तो क्या मजा ? तो मैं बादमे बस उसके साथ रहा पर उसे मेरे प्यार का और बोझ देना मायने नहीं समझा ।

मैं बस आरोही से प्यार कर रहा था । उसके बदले मैं मुझे भी उससे प्यार मिले यह मैं सोचता नहीं था । देर से ना सही मगर वो मुझे कभी तो मिलती बस इन खयालो में डूबा रहता था । और वो प्यार मुझसे करती भी तो कैसे , विहान के लिए उसका प्यार था । कोई गैर नहीं ... मैं उसके लिए कई देर तक ठहर सकता था । फिर कितने महीने या फिर साल ना लग जाए मुझे उसे हासिल करने में । बस इन खयालो के साथ मैं अकेला जीता चले जा रहा था ।

हां मेरे दिल में बोहत कुछ अब भी था पर मैं कुछ नहीं बोल गया । श्रुतिका और आरोह एक बार बोल रहे थे कि " रियांश आरोही से इतना प्यार करता है कि आरोही को

डर लगता है कि अगर उस से कोई भूल हो गयी तो रियांश खुदको कुछ कर लेगा ।" ,मतलब उन दोनों ने तक मुझे नहीं समझा , श्रुतका का तो छोड़ दो मगर आरोह तो मुझे बोहत पहले से पहचानता है । वो भी मुझे समझ ना सका , मैं उन लड़कों में नहीं आता जो लड़की के लिए कुछ भी कर ले । फिर भी हमारे मराठी में एक " खच्ची " नाम का नेम प्लेट है जो उन लड़कों को दिया जाता है ,जो लड़की के लिए पागल जैसे कुछ भी करते है । रोमियो जैसे हात की कलही काटना , उस लड़की को प्यार करने पर मजबूर करना ,उसे डराना ,और न जाने और क्या । पर मैंने ऐसा कुछ नहीं किया था ,मैं तो बस उस से प्यार करता था । फिर भी मुझे वो

नेम प्लेट मिल गया था । खैर छोड़ो.... मैं अब भी यही बोलूंगा की आरोही यह कहानी पड़ रही होगी या नहीं मुझे नहीं पता मगर ,अगर पड़ रही होगी तो उसे अब भी कुछ समझ नहीं आ रहा होगा । हम दोनों की जाती अलग होने के बावजूद मैं उसके घरवालों को मना सकता था मगर आरोही नहीं मानना चाहती थी । तो आखिर मैं चुप बैठे कुछ नहीं बोला ।

तभी उस ही वक्त राज को आरोही पसंद थी वो भी उस से प्यार करता था , अच्छा लड़का था और आरोही का खास भी था तो कुछ सालों बाद मुझे उन दोनों की आंखों में एक दूसरे के लिए प्यार देखा और उन दोनों को समझाकर आरोही को राज की और सौंप दिया ।

यह करने के सिवाय मैं और कुछ कर भी नहीं सकता था । और तब ही मुझे कुछ तो बड़ी बीमारी होने के कारण मेरे कुछ ही दिन रहे गए थे । उन दिनों के लिए ना सही ,बचे हुए दिन मैं आरोगी को खुश देखना चाहता था । और अच्छा हुआ वो मेरे प्यार में नहीं पड़ गयी ,वरना बीच में मेरा सफर छूट जाता ,इसका दुख मुझे और सताता ।

तो किताब का आखरी पन्ना यह ही तय करता है कि आरोगी राज के साथ हमेशा खुश रहती है और रियांश उसे खुश देख बाकी बचे कुछ दिन खुशी से गुजारता है । जरूरी नहीं की हर कहानी में हीरो और हेरोइन का आखिर में मिलना तय हो । यह सब मूवी में होता है

,असली जिंदगी में नहीं । खतम होगया रेलगाड़ी का सफर , वो नगर की गलियां, वो रियांश और उसके खयालात । बस खुशी इस बात की थी कि जो जिंदगी आरोही के बिना शुरू की थी वो आरोही को खुश देख कर खतम हुई ।

तो मैं बस कहना यह चाहता था कि दिल की जिद थी मेरी वो वरना चेहरे तो बोहोत से देखे हैं मेरे आंखों ने । और हमे वो बातें बोहत खामोश कर देती हैं जो हम किसी को कह नहीं पाते , एक जमाने में नींद की गोलियां खाकर सोना पड़ता था, जो कभी कहानी सुनकर सो जाता था । और भला उस लड़के का दुख किसे पता हो जिसे मोहोबत ने घेर लिया हो और वो बेरोजगार हो । और मैं तो आरोही को

इतना चाहता था कि जितना एक मरने वाला
आदमी अपने जिंदगी को चाहता हो । छोड़ो ...
नही समझ पाओगे , गेहरी बात समझने के
लिए जख्म भी गेहरे होने चाहिए ।

बस आखिर में कुछ नही बोल पाया
....नही बोल पाया , मुझे जितना उससे प्यार था
उससे कई ज्यादा उसको राज के साथ था । और
अब वो आखरी खूबसरत यादे ही है मेरे कुछ
दिन जिंदा रखने के लिए । खतम कहानी !

अब नही लौटेगा कोई रियांश किसी
आरोही के इश्क में पड़ने के लिए । मेरी आखिर
में बस उन कौवोंसे गुजारिश है कि जब मैं मर
जाऊ तो मेरी आँखें छोड़ सारा बदन खा जाना
.... मेरी आँखों से मैं उसे मरने के बाद भी

देखना चाहुंगा । आखिर में तो यह ही कहना पड़ेगा –

|| MEETING YOU WAS A GOOD ACCIDENT ||